लाल खड़ाऊं की एक जोड़ी



लेखनः मासाको मात्सुनो

चित्रः काज़ुए मीज़ुमुरा

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

नए जूतों की जोड़ी पा दुनिया भर के बच्चों को जो खुशी होती है, वह हर जगह एक समान है। फिर चाहे वे चमड़े से बनी सैंडल हों, या पुआल से बने अलपारगतास या फिर हिरण के चमड़े से बने मुलायम सपाट जूते हों, या लकड़ी से बनी खड़ाऊं। माको, एक नन्ही जापानी लड़की की जूतों की नई जोड़ी दरअसल लकड़ी से बनी खडा़ऊं थी, जो लाल लाख से पुती थी और सुन्दर तरीके से चमकती थी। यह कहानी बताती है कि मौसम-बताने का खेल खेलते वक़्त लाल खड़ाऊं के तड़क जाने के बाद माको के मन में खड़ाऊं की नई जोड़ी पाने की इच्छा जगी। इसके चलते माको ने छल-कपट का सहारा लेना चाहा।

नानी अपने बचपन के अनुभव और उससे उपजी अपनी समझ को अपनी नवासी के लिए याद कर सुनाती हैं। काज़ुए मीज़ामूरा के सुन्दर चित्र इस कहानी जितने ही नाज़ुक और प्यारे हैं।

लाल खड़ाऊं की एक जोड़ी

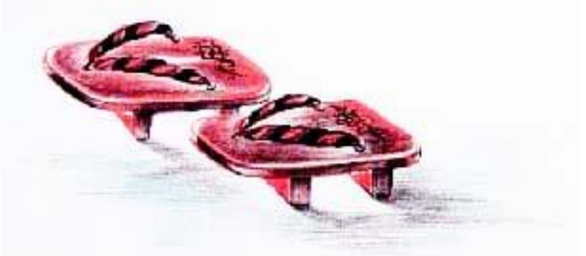
लेखनः मासाको मात्सुनो

चित्रः काज़ुए मीज़ुमुरा

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



मेरी माँ के लिए



एक जोड़ी लकड़ी की तड़की हुई खड़ाऊं!

वे मुझे कल रात अपने घर के भण्डार में तब मिलीं जब मैं अपनी नन्ही नवासी के लिए खड़ाऊं की नई जोड़ी भेजने के लिए एक डिब्बा तलाश रही थी।

खड़ाऊं की यह नई जोड़ी लाल लाख से रंगी हुई है और खूबसूरती से दमकती है।

वह तड़की हुई पुरानी जोड़ी भी लाल लाख से पुती थी और जब वह नई थी वह भी क्या खूब चमचमाती थी।

मेरी उम्र उस वक़्त लगभग उतनी ही थी जितनी आज मेरी नवासी की है।

एक शाम,

जब मैं उतनी ही छोटी थी जितनी मेरी नवासी अब है, मैं अपनी माँ के साथ ख़रीददारी करने गई।

मैं जिस देहाती इलाके में रहती थी, उस छोटे से कस्बे की मुख्य सड़क पर कई दुकानें थीं। उस सड़क के आख़िरी छोर पर तम्बाकू की एक छोटी-सी दुकान थी, जिसके सामने लाल रंग का डाक का एक डब्बा था। मुझे इस दुकान में जाना बहुत ही अच्छा लगता था, क्योंकि उसमें लकड़ी से बनी खड़ाऊं भी बिका करती थी। अगले दिन स्कूल खुलने वाला था, सो मैं उस दिन स्कूल पहन कर जाने के लिए खड़ाऊं की नई जोड़ी चुनने वाली थी।

सिर्फ़ एक जोड़ी!



दुकान में कई रंगों की खड़ाऊं की जोड़ियाँ थीं।
एक काला जोड़ा था,
दो नीले जोड़े थे,
तीन पीले,
चार लाल,
पाँच सफ़ेद
और भी कई रंगों के।
सभी बत्ती के नीचे धरे स्टैण्ड पर सजे थे।
स्टैण्ड के पीछे भी कई आले थे जिनमें खड़ाऊं की और भी जोड़ियाँ थीं।
मेरी नीली पोशाक के साथ नीली खड़ाऊं सुन्दर लगेगी, मैंने सोचा।
पर पीली जोड़ी भी खूब फबेगी।
"तुम्हें कौनसी जोड़ी चाहिए छोटी बच्ची?" दुकान वाली महिला ने पूछा।

लाल?

नीली?

पीली?

मैंने देर तक सोचा।
मेरी माँ मुस्कुराती हुई चुपचाप खड़ी मुझे देखती रही।
मैंने सोचा, और सोचा, तब आख़िरकार मैंने एक लाल जोड़ी चुनी।
यह जोड़ी सुर्ख लाल लाख से रंगी थी,
और उसकी कपड़े की पट्टियाँ लाल और काली थीं।



हाथों में अपनी नई खड़ाऊं पकड़े जब हम दुकान से निकले, अंधेरा हो चला था।

सभी दुकानों की बत्तियाँ जल चुकी थीं।

उनकी रोशनी में दुकानों में सजी चीज़ें निहायत खूबसूरत लग रही थीं।

चमकाए हुए सेब ऐसे लग रहे थे मानो उन्हें रंग दिया गया हो।

बर्फ़ पर रखी नीली मछलियाँ ऐसी लग रही थीं मानो वे ज़िन्दा हों।

और ओस से भरे गुलाबों की पुखुड़ियाँ इतनी तरोताज़ा थीं मानो उन्हें बस अभी-अभी बागान से लाया गया हो।

पर मेरी खड़ाऊं की जोड़ी इन सबसे ज़्यादा सुन्दर थी।



वह इतनी हवादार और हल्की थी

कि मुझे लगाता था कि मैंने कुछ पहना ही नहीं है।

जब मैं चलती वे बोलतीं:

खट्ट खटर, खट्ट खटर

जब मैं दौड़ती वे मेरे साथ गातीं:

खटर खटर, खट्ट खट्ट

मैं स्कूल जाती, मैं अपने दोस्तों के साथ खेलती,

मैं अपनी माँ के साथ ख़रीदारी करने जाती।

खड़ाऊं की उस जोड़ी पहने जो भी मुझे देखता

वह कहता, "कितनी सुन्दर हैं ये।"

मैं खुश थी, बहुत ही खुश।



एक शाम जब सूरज ढल रहा था

मैं और मेरे दोस्त पहाड़ी से उतर रहे थे।

सूरज अस्त होने ही वाला था, उसकी किरणों में सब कुछ नारंगी दिख रहा था। आकाश, घास, मेरे दोस्त और मैं।

''आशिता टान्कीनी नारे,'' एक लड़की ने गाया और अपनी खडाऊं हवा में उछाल दी।

''आशिता टान्कीनी नारे!'' (इसका मतलब है कल का मौसम बढ़िया हो)। कह मैंने भी ठीक यही किया।



हमारे इस खेल को मौसम-बताने का खेल कहते हैं,

अगर तुम्हारी खड़ाऊं ज़मीन पर ऐसे गिरे,



तो कल का मौसम बढ़िया होगा।

और अगर ऐसे गिरे  तो बर्फ़ पड़ेगी।

और ऐसे तो कल शर्तिया बारिश होगी। 

और यह खेल खेलते-खेलते मेरी नई खड़ाऊं तड़क गई।



अब जब भी मैं चलती वे,
खट्ट खटर, खट्ट खटर,
बोलती ही नहीं थीं।
जब मैं दौड़ती वे,
खटर खटर, खट्ट खट्ट,
गाती भी नहीं थीं।
अब उनसे कुछ ऐसी आवाज़ निकलती थीः
गड्ड गड्ड, गडर गडर।
मैं उदास थी।

क्या माँ से खड़ाऊं की एक नई जोड़ी ख़रीदने को कहूँ? मैंने सोचा।
ना, मुझे पता था कि वे इतनी जल्दी नई जोड़ी नहीं खरीदेंगी।
मुझे याद आया कि इस जोड़ी को ख़रीदते समय उन्होंने क्या कहा था।
"इनको ठीक से संभाल कर काम लेना," उन्होंने चेताया था। "क्योंकि दूसरी जोड़ी शायद अगले त्यौहार के समय ही ख़रीदी जा सकेगी।"
और त्यौहार के आने में तो अभी दो महीने से भी ज़्यादा वक़्त था।
सो मैं अपनी तड़की हुई खड़ाऊं ही पहनती रही थी।
क्योंकि मेरी खड़ाऊं अब तड़क गई थी, वह नई नहीं रही थी।
दिन गुज़रने के साथ वह धीरे-धीरे गन्दी भी हो चली थी।
क्या मुझे इन्हें अगले दो महीनों तक पहनते रहना होगा? मैंने दुखी हो सोचा।



मैंने सोचा, खूब सोचा

और

तब मुझे एक उम्दा ख़याल सूझा!

मान लो ... मान लो, यह जोड़ी बेहद गन्दी हो जाती है; तब तो माँ को मुझे खड़ाऊं की एक नई जोड़ी दिलवानी ही पड़ेगी। इसलिए क्योंकि उन्हें यह तो पसन्द नहीं आएगा ना कि मैं लोगों के बीच गन्दी खड़ाऊं पहने घूमूं।

सो अगले दिन स्कूल से घर लौटते समय,

मैं पानी के गड्ढे में चली ताकि मेरी खड़ाऊं गीली हो जाए।

तब मैं धूल भरे खेत से गुज़री, ताकि वे मिट्टी-कीचड़ में अच्छे से सन जाएं।



देखो तो मैंने क्या पहन रखा है, कीचड़ में लथपथ लकड़ी के टुकड़े!

"अब तो माँ को नई जोड़ी ख़रीद कर देनी ही होगी," मैंने खुद से कहा।

और जब मैं उन्हें पहन कर चलूंगी वे बोलेंगीः

खट्ट खटर, खट्ट खटर।

और जब मैं दौड़ूंगी, वे गाएंगीः

खटर खटर, खट्ट खट्ट।

घर की ओर बढ़ते समय मैं अपनी इस योजना से बहुत खुश थी।

पर जब मैं कीचड़ में सनी खड़ाऊं पहने चल रही थी, मैं असहज होने लगी। मुझे डर लगने लगा कि माँ को पता चल जाएगा कि मैंने खड़ाऊं को जानबूझ कर गन्दा किया है।

फटर, फटर, फटर, फटर,

कीचड़ में सनी खड़ाऊं की जोड़ी फुसफुसा कर मानो कह रही थीः

तुम झूठी हो, तुम झूठ बोल रही हो।"



मैं जब रसोई में घुसी जहाँ माँ खाना पका रही थी, मैं बहुत धीरे-धीरे अन्दर घुसी। "क्या हुआ माको?" माँ ने मेरे गन्दे पैर देख पूछा।

"तुम किसके साथ खेल रही थी? लड़कों के साथ? पैरों में लिपटी वह भूरी चीज़ सिर्फ़ मिट्टी ही है, या रंग?"

"सिर्फ़ मिट्टी," मैंने धीमी आवाज़ में कहा।

"जाओ अपनी खड़ाऊं फौरन धो डालो जिसके पहले उसकी पट्टियाँ भूरी हों। उसके बाद पट्टियों को सावधानी से निचोड़ना और पुराने कपड़े से पोंछना। फिर खड़ाऊं को पानी गरम करने वाले गरमे के अलाव के पास सूखने के लिए रख देना। पर बहुत पास मत रखना, नहीं तो लाख का रंग पिघल जाएगा," माँ ने अपनी कोमल आवाज़ में हिदायत दी।

पर मैं अपनी जगह से हिल तक नहीं सकी।

"क्या बात है माको? जल्दी करो बेटी, नहीं तो खड़ाऊं, सुबह स्कूल जाने तक सूखेगी ही नहीं।"



मैं ... मैं यह कह ही नहीं पाई कि मेरी खड़ाऊं इतनी गन्दी हो चुकी है कि मुझे एक नई जोड़ी चाहिए।

पर माँ को कोई शक नहीं हुआ।

तब मुझे याद आया कि नई चीज़ ख़रीदने के पहले हमें अपनी पुरानी चीज़ को साफ़ कर काम में लेने की कोशिश करनी चाहिए।

यही तो हम हमेशा करते थे।

सो मैने खड़ाऊं धोई।

मिट्टी आराम से छूट गई, उसे सूख कर जमने का समय ही नहीं मिला था।

छप्प, छप्प, छप्प!

पानी बेहद ठंडा था।

मुझे भी ठंड लगने लगी थी।

मुझे पक्का पता चल गया था कि माँ नई जोड़ी नहीं ख़रीदने वाली थी, क्योंकि मिट्टी-कीचड़ धुल चुकी थी।



मैंने खड़ाऊं की पट्टियों को अच्छे से निचोड़ा और बचा पानी कपड़े से पोंछा। तब उन्हें गरमे के अलाव के पास रख दिया, पर बहुत पास नहीं।

मैंने ग़ौर किया कि पट्टियों का काला रंग छूट गया था और लाल हिस्से पर रिस आया था।

इसलिए क्योंकि वे गीली जो हुई थीं।

''खाने आओ माको, देर हो रही है,'' माँ ने हाँक लगाई।

सो मैं खड़ाऊं को रसोई में गरमे के पास सूखने रख खाने गई।

''वे जल्द ही सूख जाएंगी,'' माँ ने भरोसा दिलाया।



“क्या तुमने अपने आप ही खड़ाऊं धो ली माको,” पिता ने पूछा। “अच्छा, बहुत अच्छा।”

“कौनसा खेल खेल रही थीं तुम?” माँ ने पूछा।

“मैं ... मैं बस खेल रही थी,” मैंने अपनी छोटी बच्ची वाली आवाज़ में जवाब दिया।

अब तो नई खड़ाऊं की जोड़ी का ज़िक्र करने का सवाल ही नहीं था।
मुझे बड़ा ही दुख हुआ। अपनी कारस्तानी पर शर्म भी आई।

“हो सकता है कुछ समय बाद तुम्हारे लिए खड़ाऊं की नई जोड़ी ख़रीदी जा सके,” माँ ने कहा। “वह तड़क गई है ना, इसलिए जब तुम दौड़ती हो वह बहुत आवाज़ करती है। पर पथरीली सड़क पर मौसम-बताने का खेल मत खेलना, और खड़ाऊं को बार-बार गीला भी मत करना। ठीक है ना माको?”

“ठीक है,” मैंने सहमति में सिर हिलाया।

माँ हमेशा की तरह मुझे देख मुस्कुरा रही थी।

सो, मैंने भी मुस्कुराने की कोशिश की, पर मुस्कुरा नहीं सकी।

मैं यह जान चुकी थी कि मैं आगे कभी माँ को छकाने की कोशिश नहीं करुंगी।



यह सब घटे बहुत समय हो चुका है।

तड़की हुई यह खड़ाऊं की जोड़ी लगभग उतनी ही बूढ़ी है, जितनी मैं हूँ।

मैं अपनी नवासी के लिए खड़ाऊं की नई जोड़ी बांध रही हूँ।

क्या वह भी इन्हें पहन मौसम-बताने का खेल खेलेगी?

क्या वह भी उन्हें हवा में उछालेगी और पथरीली सड़क पर गिरने देगी?

क्या वह भी उन्हें पीनी में छपछपा कर गीला करेगी?

बेशक! मुझे तो यही लगता है, क्या तुम्हें नहीं लगता?

